रात्रीक्लास ओमशांति शिवबाबा याद है? 6.3.68

यह पाठशाला है, पाठ पढ़ना है। पाठ है ही मनुष्य से देवता बनाने का। कौन पढ़ाते हैं? बाप। बच्चों को तो समझाया है ना कि मोक्ष वा मुक्ति आदि की तो बात ही नहीं है। भक्तिमार्ग में बिचारे बहुत ही.... हुए हैं। यह तो वर्ल्ड की हिस्ट्री–जाग्राफी रिपीट करती रहती है। सतयुग में जो है, कलियुग में जो है, सबको पार्ट बजाना है। कोई भी एक्टर तत्व आदि में लीन नहीं होता है। भक्तिमार्ग का इस समय बहुत प्रभाव है। भक्ति और ज्ञान अर्थात् राम और रावण की है युद्ध। ज्ञान है नया तो थोड़े हैं। भक्ति के बहुत हैं। तुम आस्ते2 जीत पहनते जायेंगे। जब लड़ाई होती है तो, तो शक्तिवान जीतते हैं। राम की जीत होती ही है। अभी तो रावण का राज्य है ना। रामराज्य और रावण राज्य अक्षर कहते हैं; परन्तु अर्थ नहीं समझते। बाप बैठ समझाते हैं तुम रावण पर जीत पहन फिर से सुखधाम की स्थापना करते हो। वह हैं डबल हिंसक। यहाँ डबल अहिंसक। हिंसा कितनी प्रबल है, काम कितना प्रबल है। हार खा लेते हैं तो की कमाई चट हो जाती है। यह है हार और जीत। पतित हार पावन जीत। अभी तुम जानते हो हम यह बन रहे हैं। सभी को समझाओ बाप यह समझाते हैं। वहाँ 21 पीढ़ी तुम राज्य करते हो। बड़ा खुशी से एक शरीर छोड़ दूसरा लेंगे। जैसे सर्प खाल उतारती है ना। यह भी तुम्हारी पुरानी जूती है। तुम बच्चों को तो बहुत खुशी रहनी चाहिए। जानते हो हम सुखधाम में जाते हैं। शान्तिधाम, सुखधाम व दुःखधाम। यह ज्ञान तुमको और कहीं भी नहीं मिलेगा। यह चित्र तुम ही देखते हो, समझते हो। फिर 5000 वर्ष बाद तुम ही देखेंगे। अभी तुम्हारा यह है अंतिम जन्म, इस मृत्युलोक का। तुम जानते हो बाबा हमको अमर कथा सुना कर अभी अमरलोक ले जाते हैं। योगबल से तुम विश्व के मालिक बनते हो। वन्डर खाना चाहिए ना। बाबा तो –– से वार निकाल देते हैं। यह है सतसंग। सतसंग तारे कुसंग बोरे। सतसंग किसको कहा जाता है? वह तो सत बाप एक ही बार सबकी सद्गति करते हैं। कुसंग से फिर डूबते जाते हैं। अभी रावण का राज्य कितना बड़ा है। तुम्हारी योगबल से (सारी) दुनिया पवित्र (हो जा)ती है। ––– रचना के आदि, मध्य, अंत को भी जानते हो। तुम हो आस्तिक। बाकी सभी हैं नास्तिक। वह है आस्तिकों की दुनिया। यह है नास्तिकों की दुनिया। बाप कहते हैं बच्चे माया से हराओ नहीं। माया भी प्रबल है। हारते भी हैं, जीतते भी है। माया जोर से घूंसा मारती है तो हरा देते हैं। बाप सभी मिसाल बताते हैं। बाप तो कल्प2 आते हैं। अपना और रचना के आदि, मध्य, अंत का राज बताते हैं। बच्चों को खुशी रहनी चाहिए श्रीमत पर हम अपना राज्य स्थापन कर रहे हैं। ज्ञान और योगबल से। बाकी (युद्ध) आदि की बात नहीं। यह पढ़ाई है। पढ़ाई है सोर्स ऑफ इनकम। भक्ति–मार्ग में यह बातें कुछ जानते नहीं हैं। भक्ति मुर्दाबाद ज्ञान जिन्दाबाद। कोई को भी कहो तो बिगड़ते हैं। अति–इन्द्रिय सुख इस समय का गाया हुआ है। यह संगमयुग है ना। इस समय की बातें ही मिक्स कर दी हैं। बाप कहते हैं यह शास्त्र आदि सब दुर्गति के हैं। अभी बाप बैठ पढ़ाते हैं। दुनिया में और कोई कह न सके बाप, टीचर, गुरु एक ही है। यह झाड़ आस्ते2 वृद्धि को पावेगा। यह सारा झाड़ तैयार होगा यहाँ। आयेंगे फिर नम्बरवार। यहाँ तुम पढ़ते हो अमरलोक लिए। ऐसे कोई –– कहते हैं नहीं कि हम भविष्य के लिए पढ़ते हैं। तुमको बाप अमरपुरी नई दुनिया के लिए पढ़ते(पढ़ाते) हैं। वहाँ यह ज्ञान आदि न हरेगा(रहेगा)। इस संगमयुगी पुरुषोत्तम ब्राह्मण –– सबसे ऊँच –– । (न शूद्र) को न देवता को यह ज्ञान रहता है। वहाँ दुर्गति वाला कोई होता ही नहीं। तो कितनी खुशी होनी चाहिए। इसलिए गायन है अतिइन्द्रिय सुख गोप–गोपियों से पूछो। भारत जो सालवेन्ट था अभी इनसालवेन्ट है। यह भी नई बात नहीं है। तुमने कितना बार राज्य लिया है और गंवाया है। स्वर्ग यह है वन्डर ऑफ दी वर्ल्ड जिसके लिए तुम पुरुषार्थ कर रहे हो। बाप से तो बहुत प्रीत चाहिए। ऐसे बाप को बहुत प्यार से याद करना चाहिए। यह रथ भी उनको याद करते हैं ना। यह ब्रह्मा जैसे कि वनवास में है। तुम सभी वनवास में हो। अभी ससुर घर जाना है। ज्ञानरत्नों का श्रृंगार हो रहा है। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट। अच्छा, मीठे2 रुहानी बच्चों को रुहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।